पाठ - 2

निराला भाई

- महादेवी वर्मा

निर्देश (सूचना)

परिच्छेदों के आरंभ और अंत के शब्द पाठ्यपुस्तक के पृष्ठक्रमांक सहित दिए जाएँगे। विद्यार्थी कृपया पाठ्यपुस्तक से पूरा परिच्छेद पढ़े।

गद्यांश - 1 (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 6)

एक युग बीत जाने पर.....

.... ऐसा एक चित्राधार पा लेना सहज नहीं।

1) (आकलन)

1) आकृति पूर्ण कीजिए :

① लेखिका के सामने ये चित्र थे →

[ ] [ ]

② कवि के जवाब पर कुवचनि का तर्क

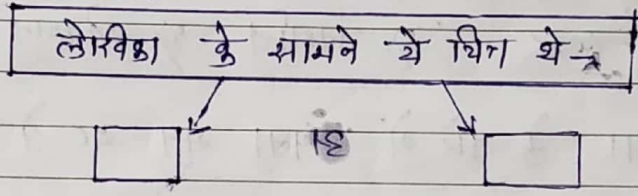

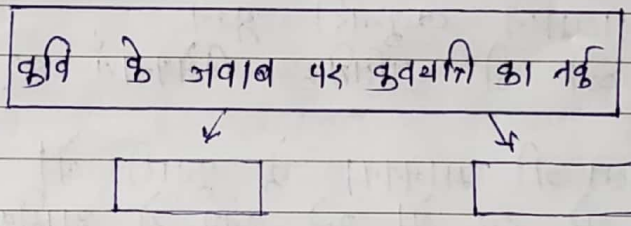

[ ] [ ]

③ उत्तर लिखिए :

निराला जी ने - 1) यह रचा....

2) यह किया....

(शब्दसंपदा)

विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

1) कुरूप x 2) प्रश्न x

3) कठिन x 4) जीवन x

शब्दयुग्म ढूंढकर लिखिए।

(अभिव्यक्ति)

* 'भाई बहन का रिश्ता अनूठा होता है' इस विषयपर 40 से 50 शब्दों मे अपना मत लिखिए।

गद्यांश - 2

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 6)

उनके अस्त-व्यस्त जीवन को ....

.... जो साधन मात्र है।

Scanned by CamScanner

कृति - 1 (आकलन)

1) आकृति पूर्ण कीजिए :

व्यक्ति का अपना हिसाब - किताब रखने संबंधी नियम

↓ [ ] ↓ [ ]

2) लिखिए

लेखिका के पास रखे तीन सौ रुपए इस प्रकार समाप्त हो गए -

1)

2)

3)

4)

3) किसी अन्य का कष्ट दूर करने के लिए लुप्त हो गई वस्तुएँ

(शब्द संपदा)

समानार्थी शब्द लिखिए

1) आदेश 2) दुष्कर 3) अंतर्धान 4) दिवंगत

(अभिव्यक्ति)

* 'निर्बंध उदारता' के बारे में अपना मत 40 से 50 शब्दों मे व्यक्त कीजिए।

P16 पर आधारित लघुत्तरी प्रश्न

* निराला जी की चारित्रिक विशेषताएँ 80 से 100 शब्दोंमे लिखिए।

उत्तर — निराला जी मानवता के पुजारी थे। उनमें मानवीय गुण कूट - कूट कर भरे हुए थे। उन्हे स्वंय से अधिक दूसरों की अधिक चिंता होती थी। खुद निर्धनता में जीवन बिताते रहे, पर दूसरों के आर्थिक कष्टो दु:खो का भार उठाने के लिए सदा तत्पर रहते थे। आतिथ्य करने में उनका जवाब नही था। अतिथियो को सदा हाथपर लिये रहते थे। इनके लिए भोजन बनाने और बर्तन माँजने में उन्हे हर्ष होता था। घर में सामान न होनेपर अतिथियों के लिए मित्रो से कुछ चीजे माँग लाने में शर्म नही करते थे। उदार इतने थे कि अपने उपयोग की वस्तुएँ भी दूसरों को दे देते थे। साथी साहित्यकार के प्रति इनके मन मे लगाव था। एक बार कवि सुमित्रानंदन पंत के स्वर्गवास की झूठी खबर सुनकर वे व्यथित हो गए थे और उन्होने पुरी रात जागकर बिता दी थी। अपरिग्रही होने के कारण उन्हे मधुकरी खाने तक की नौबत भी आई थी। निराला जी से अन्याय सहन नही होता था। इसके विरोध मे उनका हाथ और लेखनी दोनो चलते जाते थे। निराला जी आचरण से क्रांतिकारी थे। उनके प्रशसक और आलोचक दोनो थे। कुछ लोग जहाँ उनकी नम्र उदारता की प्रशंसा करते, वही कुछ लोग उनके उद्धत व्यवहार की निंदा करते नही थकते।

Scanned by CamScanner

* निराला जी का आतिथ्य भाव 80 से 100 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- निराला जी में आतिथ्य सत्कार का पुराना संस्कार था। वे अतिथि को देवता के समान मानते थे। अपने अतिथि की सुविधा में कोई कसर बाकी नहीं रखते थे। वे अतिथि को अपने कक्ष में ठहराते थे। इसके लिए स्वयं भोजन तैयार करते थे। बर्तन भी वे खुद माँजते थे। अतिथि सत्कार के लिए आवश्यक सामान घर में न होता तो वे अपने हित-मित्रों से माँगकर ले आते थे, पर अतिथि सेवा में कोई कमी नहीं रखते थे। कई बार तो वे ~~कक्ष~~ कुवायित्री महादेवी वर्मा के यहाँ से भोजन बनाने के लिए लकड़ियाँ तथा घी आदि माँगकर ले आए थे।

निराला जी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इनका कक्ष भी सुविधाओं से रहित था पर अतिथि के लिए इनके दिल में अपार सुविधा थी। एक बार प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त निराला जी का आतिथ्य ग्रहण करने आए थे। उस समय उन्होंने इनका जो सत्कार किया था वह देखते ही बनता था। निराला जी गुप्त जी के बिछौने का बंडल खुद बगल में दबाकर और दियासलाई की तीली के प्रकाश में तंग सीढ़ियों का मार्ग दिखाते हुए उन्हें अपने कक्ष में ले गए थे। कक्ष प्रकाश और सुख सुविधा से रहित था पर निराला जी की विशाल आत्मीयता से भरा हुआ था। वे गुप्त जी की सुविधा के लिए नया लोटा खरीदकर उसमें गंगाजल ले आए। घर में घी-शक्कर जो कुछ मिल सका सब तरन्त पर बिछाकर गुप्त जी को प्रतिष्ठित किया था। निराला जी का आतिथ्य भाव अपनी किस्म का निराला था।

* साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान *

1) निराला जी का मूल नाम - [ ]

2) कुछ हिंदी आलोचकों द्वारा महादेवी वर्मा को दी गई उपाधि - [ ]

मुहावरे :

1) आँखों में धूल झोंकना - धोखा देना।

2) आँखें बिछाना - अति उत्साह से स्वागत करना

3) कान में कौड़ी डालना - गुलाम बनाना।

Scanned by CamScanner